मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2016 marumegh
ISSN:2456-2904

दलहनी फसल (मूंग) की उन्नतशील खेंती

[1]विशाल कुमार, [2]अजय बाबू, [3]डॉ0 आर के सिंह और [4]डॉ0 आर एन मीणा
[1]शोध छात्र, [3]प्रोफेसर, [4]सहायक प्रोफेसर, शस्य विज्ञान विभाग, [2]शोध छात्र, मृदा विज्ञान और कृषि रसायन विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश– 221005
*ई.मेल- vishal29194@gmail.com

परिचय

विश्व में भारत का दालों के उत्पादन और उपभोग दोनों में प्रथम स्थान है। दलहनी फसलें प्रोटीन का अच्छा स्रोंत होने की वजह से इसका हमारें जीवन में काफी महत्वपूर्ण भूमिका है, खासकर उनके लिये जो शाकाहारी भोजन करते है। भारत में दालों का लगभग 24 लाख टन उत्पादन होता हैय जिसमें मूंग का 1.5–2. 0 लाख टन उत्पादन, 3– 4 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल की खेती से प्राप्त होता है। देश का लगभग 70 प्रतिशत मूंग उत्पादन मुख्यतः पाँच राज्यों राजस्थान, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, गुजरात और बिहार सें होता है। मूंग को सामान्यतः अकेले, मिश्रित खेती, और अन्तरशस्यन (इन्टर क्रापिंग) के रूप मे खेती की जाती है। इसकी खेती में फास्फोरस घुलनशील जीवाणु के उपचार से उपज में वृध्दि होती है। मूंग दलहनी फसल होने के नाते यह मृदा के फसल उत्पादन की क्षमता को भी बढ़ाता है। मूंग की खेती सें लगभग 50–65 किग्रा0 ध्हे0 नाइट्रोजन का स्थिरीकरण होता है। इसकी फसल को हम हरी खाद मे भी प्रयोग कर सकते है।

मूंग में 24.4 प्रतिशत प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फास्फोरस, आयरन, कैल्शियम, मैग्नेशियम तथा कुछ मात्रा मे राइबोफ्लेविन और थायमिन पाया जाता है। यह खानें मे स्वादिष्ट और सुपाच्य होता है जिससे मरीजों को खाने के लिए डॉक्टर सिफारिश करते है एवं छोटे बच्चे और गर्भावस्था मे महिला को भी खिलाते है। इसके आटे से हलवा, स्वादिष्ट व्यंजन, स्नैक्स और पकौड़ा बनाये जाते हैं। इसके हरे पौधों को काटकर पशुओं को चारें के रूप में खिलाते है।

भूमि एवं जलवायु

अच्छी पैदावार के लिए दोमट मिट्टी जिसका पी0एच0 मान 6.5 से 7.5 ओर जल– निकास की उचित व्यवस्था हो सर्वोत्तम मानी जाती है लेकिन इसको हल्की बलुई मृदा मे भी उगा सकते है। इसकी खेती के लिये सामान्यतः मध्यम वर्षा 60–75 से.मी. की आवश्यकता होती है।

खेत की तैयारी

मूंग की बुआई के लिये मिट्टी मे पर्याप्त नमी अवश्य होनी चाहिये जिससे बीज का अंकुरण अच्छे से हो। खेत की एक गहरी जुताई और दो हल्की जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करके पाटा लगा कर समतल व भुरभुरी कर लेना चाहिए। यदि खेत में दीमक की समस्या हो तो उसके नियंत्रण के लिये 20 से 25 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर कार्बोरियल (59 प्रतिशत) धूल को मिट्टी में अंतिम चरण की तैयारी के समय अच्छी तरह मिला देनी चाहिए।

मूंग आधारित फसल प्रणाली

निम्न लिखित फसल चक्र को मूंग के साथ लिया जा सकता है–

1. धान–गेहूं–मूंग (ग्रीष्म)	2. मक्का़मूंग–गेहूं–मूंग
3. मक्का (कम दिनों वाली)–आलू(कम दिनों वाली)–गेहूं–मूंग	4. गन्ना़ मूंग (ग्रीष्म 1– 2 के अनुपात में)
5. सूरजमुखी. मूंग (ग्रीष्म 2–2 के अनुपात में)	6. मूंग– गेहू ं/जौ
7. मूंग. अरहर (2–1 के अनुपात में)	8. धान– धान– मूंग (दक्षिण भारत)

उन्नतशील प्रजातियाँ

ग्रीष्म और खरीफ मूंग की खेती के लिये विशेषकर शीघ्र पकने वाली किस्में ही उगानी चाहिए। विभिन्न संस्थाओं द्वारा विकसित किस्में निम्नलिखित हैं– नरेन्द्र मूंग–1, पूसा रत्ना, पूसा विशाल, पूसा 672, पूसा 9531, सम्राट, पी.डी.एम.–139, आई. पी. एम. 02–03, पी.डी.एम.–11, पी.डी.एम.–14, पंत मूंग–1, पंत मूंग–2, पंत मूंग–3, पंत मूंग–4, पंत मूंग–5, एस.एम.एल.–668, यू.पी.एम.–79–4–12 आदि।

बुआई का समय

वर्षा आधारित मूंग की बुआई के लिये उपयुक्त समय मध्य जुलाई से मध्य अगस्त तक होता है जब भूमि में पर्याप्त नमी हो जाती है। देरी से बुआई करने से पीली चतेरी (धब्बें) रोग का प्रकोप कम लगता है। जिन क्षेत्रों में यह रोग कम लगता है और बारिश भी कम पड़ती है वहाँ जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक बुआई करनी चाहिए।

बीज दर एवं बुआई

एक हेक्टेयर क्षेत्रफल की बुआई के लिये 15–18 किग्रा0 बीज पर्याप्त है। मूंग की अच्छी उपज के लिये इसकी बुआई एक निश्चित दूरी एवं पंक्तियों में करनी चाहिए। पंक्ति से पक्ति की दूरी– 30 से 35 सेमी0 तथा पौधें से पौधें की दूरी 7 से 10 सेमी0 रखना ठीक रहता है।

बीज– शोधन एवं बीजोपचार

मृदा एवं बीज–जनित रोगों से बचने के लिये इसका शोधन करना जरूरी होता है। अन्यथा यह अंकुरण के समय या अंकुरण के बाद बीजों एवं पौधों को क्षति पहुँचाते है। बीज– शोधन के लिये कवकनाशी 2– 2.5 ग्राम थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किग्रा0 बीज को उपचारित करना चाहिए।

बीज– शोधन करने के बाद राइजोबियम कल्चर से बीजोंपचार करते है। दलहनीय फसलों में जैव–उर्वरकों जैसे– राइजोबियम कल्चर और फास्फोरस को घुलनशील बनाने वाले सूक्ष्म– जीवाणु के प्रयोग से पैदावार में काफी वृध्दि होती है। मूंग के बीज का उपचार करने के लिये आधा लीटर पानी, 100 ग्राम गुड़ एवं 2 ग्राम गोंद को एक साथ मिलाकर गर्म करते है। इसके बाद इसे ठंडा करके एक पैकेट राइजोबियम कल्चर प्रति 10 किग्रा0 बीज के अनुसार लेकर अच्छी तरह मिलाते है। मिलाने के बाद इसको छाया मे सुखाते है और फिर बुआई के लिए प्रयोग कर सकते है।

सिंचाई

खरीफ का मौसम होने की वजह से और वर्षा का समयानुसार पड़ने पर खेतों में पर्याप्त नमी रहती है जिससे सिंचाई की आवश्यकता नही होती है। यदि कई दिनों तक बारिश नही होती है तो आवश्यकतानुसार दो से तीन सिचाई दे सकते है। अच्छी उपज के लिये बुआई के 55– 58 दिनों बाद सिंचाई बंद कर देनी चाहिए। पौधों में फूल आने के समय नमी का होना नितांत आवश्यक है अन्यथा फलियों की संख्या और आकार कम हो जाते हैं।

पोषक तत्व प्रबंधन

उर्वरकों का सही प्रयोग मृदा परीक्षण के उपरांत समुचित मात्रा में देने से ही अच्छी उपज प्राप्त होगी। वैज्ञानिकों द्वारा संस्तुत उर्वरकों की मात्रा को भी आप दे सकते है जो निम्न है– नाइट्रोजन 15 किग्रा0, फास्फोरस 50 किग्रा0, पोटाश 50 किग्रा0, सल्फर 20 किग्रा0 और जिंक 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर। उर्वरकों को बुआई के समय कूड़ों में देनी चाहिए।

पौध सुरक्षा

मूंग की खेती में फसलों की सुरक्षा करना अतिआवश्यक है क्योंकि लगभग 50 प्रतिशत से भी अधिक तक उपज की हानि हो जाती है। खरीफ (वर्षा) ऋतु में बुआई देरी से करने से रोगों का प्रकोप कम लगता है।

खरपतवार नियंत्रण

मुख्यतः दो निराई करना आवश्यक होता है पहली बुआई के 15– 20 दिनों बाद और दूसरी बुआई के 40– 45 दिनों बाद। प्रथम सिंचाई के बाद निराई करने से खरपतवार नष्ट होने के साथ–साथ भूमि में वायु का संचार भी होता है जिससे मूल ग्रन्थियों में क्रियाशील जीवाणुओं द्वारा वायुमंडलीय नाइट्रोजन को एकत्रित करने में सहायक होता है। यदि निराई नही हो पाती है तो हमें खरपतवारनाशीयों का प्रयोग करनी चाहिए। चौड़ी पत्ती तथा घास वाले खरपतवार को रासायनिक विधि से नष्ट करने के लिए पेन्डीमेथिलीन (30 ई.सी.) 3.30 लीटर या फ्लूक्लोरोलिन (45 ई.सी.) 2.20 लीटर मात्रा का 600–800 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के तुरन्त बाद या अंकुरण से पहले छिड़काव कर देना चाहिए।

कीट

मूंग में मुख्य रूप से निम्न कीटों का प्रकोप होता है जैसे जैसिड, सफेद मक्खी, टिड्डे आदि इससे फसल को बचाने के लिये 8–10 कि.ग्रा. प्रति एकड़ क्लोरोपाइरीफॉस 2 प्रतिशत या मेथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत की धूल का पौधों पर बुरकाव करें।

रोग

पीला मोजैक रोग– मूंग की फसलों को सर्वाधिक नुकसान इसी रोग से होता है।पत्तियां पीली हो जाती है जिससे प्रकाशसंश्लेषण की क्रिया प्रभावित होने से पौधे की वृध्दि एवं विकास मे कमी आ जाती है। इसकी रोकथाम के लिये मिथाइल–ओ–डिमिटान (25 ई.सी.) या डाइमोथेएट (30 ई.सी.) के एक लीटर मात्रा को 600–800 लीटर पानी मे घोलकर आवश्यकतानुसार 10–12 दिनों के अंतराल पर 2 से 3 छिड़काव करें। पीला मोजैक प्रतिरोधी किस्मों को उगाये। उर्वरकों का सही मात्रा मे संतुलित प्रयोग करना चाहिए।

कटाई

फलियों का पक कर काली हो जाने पर हम दो से तीन तुड़ाई कर सकते है। फसलों की कटाई करने का उपयुक्त समय तब मानी जाती है जब 85 प्रतिशत फलियां पक गयी हो। यदि फसल पूरी तरह पकने के बाद कटाई करते है तो फलियां फट कर छिटकने का डर रहता है जिससे उपज में काफी नुकसान होता है इसलिये उपयुक्त समय होने पर तुरंत कर लेनी चाहिए। कटाई करने के लिए हसिया का प्रयोग कर सकते है। कटाई करने के बाद यदि फलियों में ज्यादा नमी हो तो उसे धूप में सूखा लेते है फिर उसकी मड़ाई (थ्रेसिंग) करते है। मड़ाई करने के बाद बीज को साफ करके धूप मे सूखा देना चाहिए।

उपज

खेती करने के उचित प्रबंधन को अपनाने से लगभग 11–12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज की प्राप्ति हो जाती है।